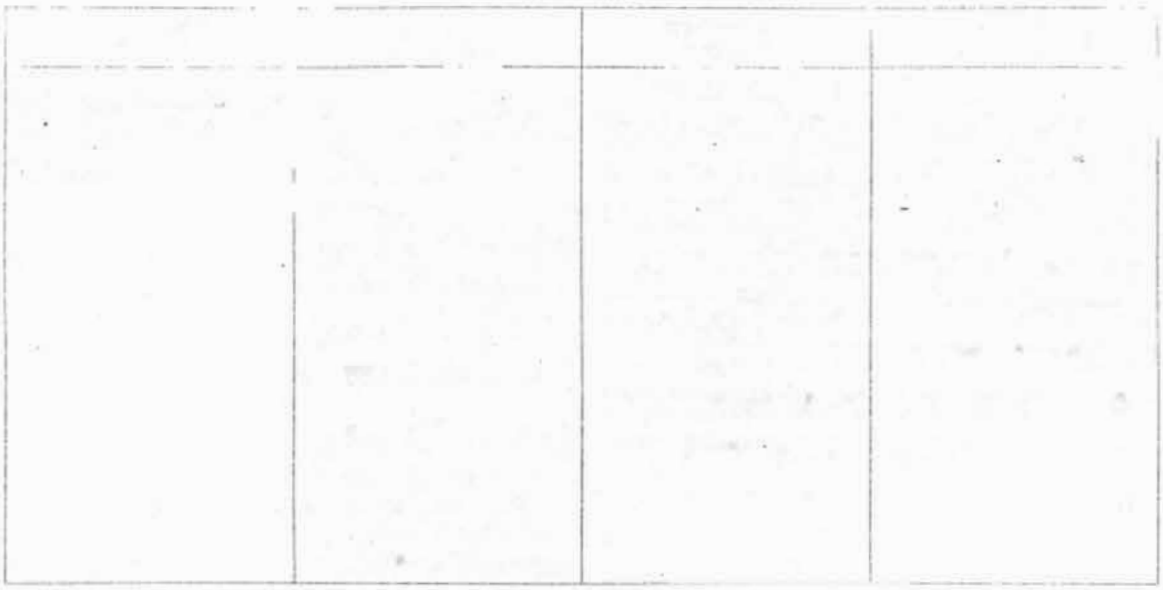

इकाई—V आपदा प्रबन्धन

1. मानवीय मूलों के कारण घटित आपदाएँ—आणविक (Nuclear)
   जैव (Biological)
   रासायनिक (Chemical)
2. सामान्य आपदाएँ (Common Hazards)—निवारण एवं नियंत्रण
3. समुदाय आधारित आपदा प्रन्धन

वर्ग X

समय—3 घंटे	अंक—100
इकाई—1 भारत एवं समकालीन विश्व—II	25
इकाई—2 भारत संसाधन एवं उनका दोहन	25
इकाई—3 प्रजातांत्रिक राजनीति—II	22
इकाई—4 अर्थशास्त्र की समझ	22
इकाई—5 आपदा प्रबन्धन	6

इकाई—I भारत एवं समकालीन विश्व–II

इकाई	विषय-वस्तु	लक्ष्य/उद्देश्य	प्रक्रिया/संसाधन
1. यूरोप में राष्ट्रवाद	• 1830 के बाद यूरोप में राष्ट्रवाद का विकास • मेजनी आदि के विचार • पोलैण्ड, हंगरी, इटली जर्मन, ग्रीस आदि के आन्दोलनों की सामान्य विशेषताएँ	• यूरोप में उभरते राष्ट्रीयता की भावना से परिचित कराना • इटली के एकीकरण में मेजनी, गैरीबाल्डी, कावूर का योगदान बताना • जर्मनी के एकीकरण में विलिएम, बिस्मार्क, बुद्धिजीवियों एवं शिक्षा संस्थानों का योगदान बताना • ग्रीस, पौलैण्ड, हंगरी में तत्कालीन अवस्था के प्रति राष्ट्रीयता के प्रभाव से उभरे विद्रोहों से परिचित कराना	• फिल्में, चित्र, विडियोक्लिप, मानचित्र अध्ययन
2. हिन्द-चीन में राष्ट्रवादी आंदोलन	• हिन्द-चीन में फ्रांसीसी उपनिवेशवाद • फ्रांसीसियों के विरूद्ध क्रमिक संघर्ष • फान-दिन, फांग-फांग बोइ चाउ, नागु एन एस क्यू • द्वितीय विश्वयुद्ध और मुक्ति संघर्ष • अमेरिका और द्वितीय विश्वयुद्ध	• उपनिवेशवाद का शिकार एशियाई देशों में हिन्द चीन (इंडोनेशिया) की तत्कालीन परिस्थितियों से अवगत कराना • इण्डोनेशिया के राष्ट्रवादी नेताओं के स्वतंत्रता हेतु किए गए प्रयासों से अवगत कराना • इण्डोनेशिया का फ्रांस के विरूद्ध मुक्ति संघर्ष • द्वितीय विश्वयुद्ध में उन परिस्थितियों की समझ जिनसे अमेरिका विश्वयुद्ध में शामिल हुआ	• चित्र, फिल्म, एशियाई भूगोल का मानचित्र

इकाई	विषय-वस्तु	लक्ष्य/उद्देश्य	प्रक्रिया/संसाधन
3. भारत में राष्ट्रवाद सविनय अवज्ञा आंदोलन	• प्रथम विश्वयुद्ध के कारण और परिणाम का भारत से अन्तर्सम्बंध • खिलाफल आंदोलन • असहयोग आंदोलन • नमक सत्याग्रह पृष्ठभूमि, कारण, परिणाम • किसान, मजदूर और जन-जातियों का विद्रोह • विभिन्न राजनीतिक पार्टियों की गतिविधियाँ	• प्रथम विश्वयुद्ध का संक्षिप्त परिचय भारत के राष्ट्रीय आन्दोलन से जोड़ना • बिटिश हुकूमत के वादा खिलाफी को समझाना, राष्ट्रीय आन्दोलन में हिन्दू-मुस्लिम एकता को मजबूत बनाना • सत्याग्रह से परिचित कराना एवं उसके दूरगामी लक्ष्य से अवगत कराना • शोषक की नितियों के खिलाफ सत्याग्रह में लोकभागदारी को बढ़ाने एवं उसकी पृष्ठभूमि, कारण, परिणाम की समझ पैदा करना • सविनय अवज्ञा आंदोलन के भारतीय एवं ब्रिटिश सत्ता पर प्रभाव से अवगत कराना • अँग्रेजी नीतियों के विरोध में देश के विभिन्न वर्गों और क्षेत्रों में उठनेवाले विद्रोहों का स्वरूप बताना • तत्कालीन राजनीतिक पार्टियों यथा कांग्रेस, साम्यवादी, मुस्लिम लीग, स्वराज्य पार्टी, आर० एस० एस० के गतिविधियों/क्रियाकलापों से अवगत कराना।	• फिल्में, विडियोक्लिप, चित्र, स्वतंत्रता सेनानियों से साक्षात्कार • संग्रहालय भ्रमण, मानचित्र अध्ययन • स्वतंत्रता सेनानियों से साक्षात्कार • नाटक प्रदर्शन, मुखौटे • नाट्य रूपान्तरण

इकाई	विषय-वस्तु	लक्ष्य/उद्देश्य	प्रक्रिया/संसाधन
4. अर्थव्यवस्था और आजीविका	• औद्योगीकरण (1850–1950) ब्रिटेन और भारत में औद्योगीकरण • औद्योगिक उत्पादन एवं कुटीर उद्योगों के बीच सम्बंध • मजदूरों की आजीविका (ब्रिटेन और भारत) • संगठित और असंगठित क्षेत्रों में काम करने वाले ब्रिटेन और भारत के मजदूरों का जीवन स्तर	• औद्योगीकरण के कारणों की समझ, उपनिवेशवादी व्यवस्था से उपजे शोषक और शोषित देशों की अर्थव्यवस्था से अवगत कराना, कुटीर उद्योगों की उपयोगिता एवं उनके प्रति सौन्दर्यबोध, आधुनिक समाज में आए परिवर्तन, मशीनी युग से मजदूरों की स्थिति, कुटी उद्योग से अर्थव्यवस्था का संबंध • मजदूरों के जीवनस्तर के प्रति समझ और मानवीय दृष्टिकोण का विकास	• विडियोक्लिप, चित्र, फिल्में • कुटी उद्योगों के क्षेत्र का भ्रमण • असंगठित क्षे में लगे मजदूरों के जोखिम और संगठित क्षेत्र में कार्यरत मजदूरों के जोखिम में अंतर दिखना कारखाने में काम करने वाले मजदूरों के जीवनस्तर का अध्ययन
5. शहरीकरण एवं शहरी जीवन	**शहरीकरण एवं शहरी जीवन** • शहरीकरण की पद्धति • प्रवजन और शहरीकरण • शहरों का विकास सामाजिक बदलाव और शहरीजीवन • व्यवसायी वर्ग, मध्यम वर्ग, मजदूर वर्ग और शहरीकरण	• शहरीकरण की पृष्ठभूमि एवं उससे उत्पन्न स्थितियाँ की समझ बनाना, उसका प्रभाव समझाना • शहरीकरण के संदर्भ में नगरों एवं छोटे शहरों के बीच के अंतर को समझाना	अखबारों, पत्र-पत्रिकाओं में दिए गए सूचनाओं का संग्रह
6. व्यापार और भूमंडलीकरण	**व्यापार और भूमंडलीकरण** • 19 वीं तथा प्रारंभिक 20 वीं सदी में विश्व बाजार का विस्तार और एकीकरण • दो महायुद्धों के दरम्यान व्यापार और अर्थव्यवस्था • 1950 के दशक के बाद परिवर्तन	• विश्व बाजार के स्वरूप की समझ और उसकी उपयोगिता, लाभ और हानी विश्वव्यापी आर्थिक संकट का अर्थव्यवस्था पर प्रभाव, विश्व बाजार के आलोक में बदलते अन्तरराष्ट्रीय सम्बन्ध की समझ पैदा करना	• विभिन्न अन्तरराष्ट्रीय कम्पनियों के logo इकट्ठे करना • Band Name की उत्पाद से पहचान एवं कम्पनियों से सम्बद्धता का संकलन • विभिन्न कम्पनियों के CEO के साक्षात्कार का अवलोकर एवं चित्रों का संग्रहण

इकाई	विषय-वस्तु	लक्ष्य/उद्देश्य	प्रक्रिया/संसाधन
	• आज के जीवकोपार्जन और भूमंडलीकरण का अन्तरसाम्य अध्ययन क्षेत्र • 1945 से 1960 के दशक के बीच अन्तरराष्ट्रीय आर्थिक सम्बन्ध		• घरेलू उपयोग की वस्तुओं का कम्पनियों के साथ सम्बद्धता की पहचान/ अपने परिवेश में उसका इस्तेमाल करने वाले लोगों का वस्तुओं के साथ वर्गीकरण एवं आँकड़ा संग्रहण
7. प्रेस संस्कृति और राष्ट्रवाद	• यूरोप में छपाई का इतिहास • 19 वीं सदी के भारत में प्रेस का विकास • प्रिन्ट संस्कृति, आम बहस और राजनीतिक सम्बन्ध	• छपाई यंत्रों के आविष्कार एवं क्रमिक विकास का शिक्षा और ज्ञान पर प्रभाव • उसे उत्पन्न राष्ट्रीयता एवं संस्कृति से अवगत कराना • भारतीय समाज पर प्रेस के प्रभाव प्रिन्ट मीडिया द्वारा उभारे जानेवाले मुद्दों एवं उससे जुड़े जनमानस की प्रकृति की समझ पैदा करना	
8. उपन्यास का इतिहास	• उपन्यास और आधुनिक समाज में परिवर्तन के बीच संबंध • भारत में 19 वीं सदी के उपन्यास एक विधा के रूप में उपन्यास का प्रादुर्भाव: पश्चिम के संदर्भ में।	• ऐतिहासिक सन्दर्भों में उपन्यास की समझ, बदलते जीवन शैली को उभारने में उपन्यास का महत्त्व, भारतीय उपन्यासकारों के उपन्यास लेखन की समझ। प्रेमचन्द, नागार्जुन, फणीश्वरनाथ रेणु, रामकृक्ष वेनीपुरी, रवीन्द्रनाथ टैगोर, शरतचन्द्र आदि की कृतियों से अवगत कराना	• रूसी क्रांति में 'मदर' भारतीय क्रांति में आनन्दमठ, दांते का Divine comedy, नीलदर्पण आदि का संदर्भ
		• पश्चिमी देशों में उपन्यास एक विधा के रूप में अपना स्थान बनाने में सक्षम होने के कारण महत्त्वपूर्ण उपन्यासकारों यथा शेक्सपियर, गोर्की, की रचनाओं के सामयिक जुड़ाव को समझना	
9. इतिहास पुरुष	• राहुल सांकृत्यायन		• चित्र एवं कृतित्व के चार्ट

इकाई—II भारत-संसाधन एवं उपयोग

इकाई	Key Concept (मूल अवधारणा)	उद्देश्य/Learning Outcome	Activity/Resource (गतिविधि/संसाधन)
1. भारत : संसाधन एवं उनका विकास			
संसाधन	• संसाधन का महत्व, प्रकार, संसाधन नियोजन, संसाधनों का संरक्षण • प्राकृतिक संसाधन—भूमि संसाधन, मृदा निर्माण, मृदा के प्रकार एवं वितरण, भूमि उपयोग का बदलता स्वरूप, भूक्षरण एवं भूसंरक्षण	• संसाधन के विभिन्न स्रोत एवं उसकी उपयोगिता से अवगत कराना • संरक्षण के प्रति जागरूक बनाना।	• चित्र, अवलोकन • यह पता करना कि आज जहाँ भवन बने हैं तीस-चालीस वर्ष पहले वहाँ क्या था एवं उस भूमि का उपयोग किस रूप में होता था। • साक्षात्कार (बड़े-बुजुर्गों से)
—कृषि संसाधन	• महत्त्व, कृषि के प्रकार, भारतीय कृषि की मुख्य विशेषताएँ, प्रमुख फसलें, राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था में कृषि का योगदान, रोजगार, उत्पादन, खाद्य सुरक्षा, वैश्वीकरण एवं कृषि पर इसका प्रभाव पशुपालन एवं मत्स्य पालन।	• देश के विभिन्न भागों में खेती में प्रयुक्त विभिन्न तरीकों एवं विभिन्नताओं की जानकारी देना तथा बाजार पर पड़ने वाले प्रभावों से अवगत कराना।	• अवलोकन, कृषि उत्पादन बाजार समिति के प्रांङ्गण का अवलोकन एवं साक्षात्कार
—जल संसाधन	• जल के स्रोत, वितरण, जलसंसाधन का उपयोग, बहुद्देशीय परियोजनाएँ, जल संकट, जल संरक्षण एवं प्रबन्धन की आवश्यकता, वर्षा जल संग्रहण एवं उसका पुनर्चक्रण • सोन परियोजना का अध्ययन	• जल स्रोतों की उपलब्धता एवं उनसे संबंधित परियोजनाएँ, रोजगार एवं प्रबन्ध की समझ विकसित करना • प्रतिव्यक्ति घटते जल की मात्रा के प्रति जागरूकता पैदा करना	• चित्र, वृतचित्र, फिल्म, शैक्षिक भ्रमण, प्रदेश में स्थित कोसी, वाल्मिकी, इन्द्रपुरी आदि बहुउद्देशीय नदी परियोजनाओं का
—खनिज संसाधन	• खनिज के प्रकार, वितरण, खनिजों का आर्थिक महत्व, एवं खनिजों का संरक्षण	• खनिजों की महत्ता उपलब्धता एवं संरक्षण की महत्ता से अवगत कराना।	• पड़ोसी प्रांत के खनिज बहुल क्षेत्रों भ्रमण, खनिजों का अवलोकन।

इकाई	Key Concept (मूल अवधारणा)	उद्देश्य/Learning Outcome	Activity/Resource (गतिविधि/संसाधन)
—वन एवं वन्यप्राणी संसाधन	• प्रकार, वितरण, वन सम्पदा तथा वन्य जीवों का ह्रास एवं संरक्षण।	• वनों एवं वन्य प्राणियों के महत्त्व से अवगत कराना तथा इनके विलुप्त होने के दुष्प्रभाव एवं संरक्षण के संबंध में जागरण।	• अभ्यरणों एवं उपवनों का भ्रमण कराना।
—शक्ति संसाधन	• शक्ति संसाधन के प्रकार, परम्परागत एवं गैर परम्परागत शक्ति के साधन, वितरण, उपयोग तथा संरक्षण	• शक्ति संसाधनों की आवश्यकता से अवगत कराना। • नये संसाधनों के लिए खोजी प्रवृत्ति का विकास	• परम्परागत एवं गैर परम्परागत शक्ति के साधनों का अवलोकन • मानचित्र में शक्ति के साधन के केन्द्रों को दर्शाना
2. निर्माण उद्योग	• उद्योगों का वर्गीकरण, क्षेत्रीय वितरण, राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था में उद्योगों का योगदान • बिहार की कोई एक औद्योगिक इकाई का अध्ययन • उद्योगों से उत्पन्न प्रदूषण का प्रभाव • प्रदूषण को नियंत्रित करने के उपाय	• राष्ट्रनिर्माण में उद्योग की भूमिका से अवगत कराना तथा औद्योगीकरण के परिणामस्वरूप होनेवाले प्रदूषण के प्रति सचेत करना।	• मानचित्र, चित्र, पंचवर्षीय योजनाओं से संदर्भ।
3. परिवहन, संचार और व्यापार	• परिवहन के प्रकार एवं महत्त्व • संचार के माध्यम एवं उसका महत्त्व • राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार पर परिवहन एवं संचार के साधनों का प्रभाव • जनजीवन पर प्रभाव	• व्यापारिक प्रगति में परिवहन एवं संचार के साधनों की भूमिका से अवगत कराना • जनजीवन पर पड़नेवाले प्रभावों एवं उनकी उपयोगिता के प्रति सकारात्मक सोच पैदा करना।	• विभिन्न मॉडल निर्माण, अवलोकन, उपयोग
4. उत्तरी अमेरिका : संक्षिप्त अध्ययन	• स्थिति एवं विस्तार, प्राकृतिक बनावट, जलवायु, खनिज, कृषि तथा उद्योग	• अंतर्राष्ट्रीयता के ज्ञान को संवर्धित करने एवं उनसे प्रेरणा लेना।	• मानचित्र, मॉडल, चित्र, दूरदर्शन पर प्रसारित एवं पत्रिकाओं में प्रकाशित विशेष रपटों को सुनना, पढ़ना।

इकाई	Key Concept (मूल अवधारणा)	उद्देश्य/Learning Outcome	Activity/Resource (गतिविधि/संसाधन)
5. मानचित्र अध्ययन	• उच्चावच प्रदर्शन की विधियाँ • समोच्च रेखाओं पर विभिन्न भू-आकृतियों का प्रदर्शन— पर्वत, पठार, जलप्रपात एवं V आकार की घाटी।	• उच्चावच को समतल कागज पर कैसे प्रदर्शित करें, की समझ पैदा करना।	• समोच्च रेखाओं का ग्राफ, चित्र

प्रोजेक्ट :—

- विभिन्न प्रकार के फसलों, उद्योगों, जल प्रयोजनाओं, वन संसाधन पर फोटोग्राफों, मानचित्रों, प्रकाशित छायाचित्रों के साथ प्रोजेक्ट तैयार करना।
- आस-पास के जल प्रदूषण पर चित्र बनाएँ।

इकाई—III लोकतांत्रिक राजनीति–II

क्र.	प्रकरण (थीम)	उप प्रकरण (सब थीम)	उद्देश्य
1.	लोकतंत्र का व्यावहारिक स्वरूप	• क्या लोकतंत्र में विभेद के तत्व अन्तर्निहित है? • जातियों का हमारी लोकतांत्रिक राजनीति पर प्रभाव • क्या राजनीति जातियों के व्यवहार को परिवर्तित करता है? • लिंग भेद एवं साम्प्रदायिक विभेदों से लोकतंत्र किस हद तक प्रभावित होता है?	• भारतीय संदर्भ में सामाजिक विषमता एवं राजनीतिक प्रतिस्पर्द्धा को विश्लेषित करना • जातीय एवं साम्प्रदायिक चुनौतियों से भारतीय लोकतंत्र किस दृह तक प्रभावित होता है, इसकी समझ विकसित करना। • लिंग का परिप्रेक्ष्य किस रूप में भारतीय राजनीति को प्रभावित करता है, इसकी समझ विकसित करना।
2.	सत्ता में भागीदारी की कार्य प्रणाली	• लोकतंत्र में सत्ता विभाजन के उपबंध • संघात्मक शासन व्यवस्था • राष्ट्रीय एकता में संघात्मक व्यवस्था कैसे सहायक है? • किस हद तक सत्ता का विकेन्द्रीकरण राष्ट्रीय एकता के मूल्यों के संवर्धन में अपरिहार्य है? • लोकतंत्र कैसे विभिन्न सामाजिक समूहों को सन्निहित करता है? • **बिहार में पंचायती राज व्यवस्था की एक झलक**	• विद्यार्थियों की संघीय व्यवस्था की जानकारी देना • सत्ता के विकेन्द्रीकरण की अवधारणा से सुपरिचित कराना। • संघात्मक व्यवस्था में एकात्मकता की आत्मा को संवर्धित करना।

क्र.	प्रकरण (थीम)	उप प्रकरण (सब थीम)	उद्देश्य
3.	प्रतिस्पर्द्धा एवं संघर्ष	• प्रतिस्पर्द्धा एवं संघर्ष के अर्थ: • स्वतंत्र भारत में आम जन के पक्ष में संघर्ष (1974 का संघर्ष) • नेपाल का संघर्ष • राजनीतिक दल क्या है? • भारत के प्रमुख राजनीतिक दल (राष्ट्रीय एवं क्षेत्रीय) • राजनीतिक दलों में प्रतिस्पर्द्धा का लोकतंत्र के सशक्तीकरण एवं राष्ट्रीय विकास में योगदान।	• लोकतंत्र के विस्तार में आम जन के संघर्ष एवं राजनीतिक दलों में प्रतिस्पर्द्धा की समझ को विकसित करना। • भारत में दलीय व्यवस्था से सुपरिचित कराना।
4.	लोकतंत्र की उपलब्धियाँ	• क्या भारतीय लोकतंत्र अपने उद्देश्यों की प्राप्ति कर रहा है? • भारतीय समाज के पुनर्निर्माण में लोकतंत्र का योगदान	• भारतीय लोकतंत्र की उपलब्धियों एवं कठिनाइयों के संदर्भ से परिचित होते हुए बच्चों में समानता, स्वतंत्रता, भातृत्व एवं व्यक्ति की गरिमा के प्रति आलोचनात्मक कौशल विकसित करना।
		• भारत में लोकतंत्र की वास्तविक स्थिति • राष्ट्रीय उद्देश्यों यथा समानता, स्वतंत्रता एवं भ्रातृत्व की प्राप्ति • भारतीय लोकतंत्र कितना सफल है? • भारत में लोकतंत्र की सफलता के कारक तत्त्व	•
5.	लोकतंत्र की चुनौतियाँ	• क्या लोकतंत्र की अवधारणाएँ हमारे सिद्धांत एवं व्यवहार में सामंजस्य स्थापित कर पा रही है? • लोकतंत्र से जनता की अपेक्षाएँ • क्या भारतीय लोकतंत्र जनता की उन्नति, सुरक्षा और गरिमा के संवर्धन में सहायक है?	• लोकतंत्र के प्रभावकारी तत्त्वों और उनमें अन्तर्निहित कमियों को रेखांकित करते हुए बच्चों में लोकतंत्र को सबल बनाने हेतु सृजनात्मक दृष्टि प्रदान करना। • जनता की सक्रिय भागीदारी हेतु कल्पनाशीलता को विकसित करना।

इकाई--IV अर्थशास्त्र की समझ

इकाई	पाठ्यक्रम	उद्देश्य	क्रियाशीलन
I. विकास का इतिहास	• विकास की समझ • विकास का माप एवं विविध सूचकांक • बिहार के विकास की स्थिति • देश के आर्थिक विकास में बिहार के आर्थिक विकास की भूमिका • स्वास्थ्य, शिक्षा और विकास के बीच संबंध	• शिक्षार्थियों को विकास के इतिहास से परिचय कराना • शिक्षार्थियों के अंदर राज्य और देश की आर्थिक प्रगति में अपनी भूमिका के प्रति जागरूक करना • राज्य एवं देश के विकास में स्वास्थ्य और शिक्षा के संबंध की समझ विकसित करना	• शिक्षार्थियों को अपने गांव के विकास की प्रक्रिया को कहानी के माध्यम से लिखवाना। • द्विपक्षीय संवाद के माध्यम से बच्चों में समझ विकास करना
II. राज्य एवं राष्ट्र की आय	लेख के माध्यम से • बिहार की आय • राष्ट्रीय आय • प्रतिव्यक्ति आय और • विकास में राजकीय/ राष्ट्रीय एवं प्रति व्यक्ति आय का योगदान	• शिक्षार्थियों के अंदर राजकीय आय, राष्ट्रीय आय एवं प्रतिव्यक्ति आय की समझ विकसित • विकास में शिक्षार्थियों के परिवार के आय का महत्ता की समझ विकसित करना	• टीचिंग लर्निंग मैटेरियल का उपयोग (जैसे ग्राफ) • शिक्षार्थियों द्वारा अपने टोले/मुहल्ले का सर्वेक्षण कर उसके रिपोर्ट का प्रस्तुतीकरण
III. मुद्रा, बचत एवं साख	• मुद्रा का इतिहास • मुद्रा है क्या? • मुद्रा का आर्थिक महत्त्व • बचत एवं साख क्या है?	• शिक्षार्थियों के अंदर मुद्रा के उपयोग की समझ, बचत एवं साख की विकास में भूमिका की समझ उत्पन्न करना। • मौद्रिक सिद्धांतों का आभास कराना।	• परिवेश से उदाहरण • द्विपक्षीय प्रश्नोत्तरी विधि • बच्चों को उपाये ढूंढने के लिए स्वलेखन

इकाई	पाठ्यक्रम	उद्देश्य	क्रियाशीलन
IV. हमारी वित्तीय संस्थाएँ	• हमारे राज्य की वित्तीय संस्थाएँ, • हमारे देश की वित्तीय संस्थाएँ, • राज्य एवं देश के आर्थिक विकास में इन संस्थाओं की भूमिकाएँ • व्यवसायिक बैंक और इनकी राज्य के विकास में भूमिका • सहकारिता और राज्य के विकास में भूमिका • स्वयं सहायता समूह और गाँव, कस्बा और जिला के विकास में भूमिका	• प्रत्येक स्तर की वित्तीय संस्थाओं के बारे में समझ विकसित करना • गरीबी एवं बेकारी उन्मूलन में इनकी भूमिका को समझना • वित्तीय प्रणाली को समझाना	• व्याख्यान विधि • अपने टोले-मुहल्ले की महिलाओं से बातचीत • वर्ग में बातचीत का प्रस्तुतीकरण।
V. रोजगार और सेवाएँ	• भारतीय एवं बिहार की अर्थव्यवस्था में सेवा क्षेत्र का महत्त्व-रोजगार सृजन के रूप में सेवाओं की भूमिका। • भारत-विश्व को सेवा प्रदाता के रूप में। • सेवा क्षेत्र के विस्तार एवं विकास के लिए बुनियादी सुविधा एवं शिक्षा की भूमिका।	• शिक्षार्थियों के अन्दर रोजगार सृजन की प्रक्रिया की समझ पैदा करना • रोजगार के सृजन में सेवा क्षेत्र की भूमिका की जानकारी देना • सरकार द्वारा इस क्षेत्र में विनियोग क्यों किया जा रहा है—इसकी समझ स्थापित करना	• प्रश्नोत्तरी एवं व्याख्यान विधि द्वारा • द्विपक्षीय प्रश्नोत्तरी विधि
VI. वैश्वीकरण	• वैश्वीकरण क्या है? • भारत में वैश्वीकरण क्यों? • 1991 से पहले वैश्वीकरण का इतिहास, • राज्य नियंत्रित उद्योग • 1991 का आर्थिक सुधार • वैश्वीकरण एवं आम आदमी	• छात्रों को यह समझाना कि वैश्वीकरण उन्हें किस तरह प्रभावित कर रहा है।	• प्रश्नोत्तरी एवं व्याख्यान विधि द्वारा • उदाहरण रीति

इकाई	पाठ्यक्रम	उद्देश्य	क्रियाशीलन
VII. उपभोक्ता जागरण	• उपभोक्ता जागरण • उपभोक्ता शोषण के कारण • उपभोक्ता संरक्षण एवं इसमें सरकार की भूमिका • आर्थिक शोषण के संदर्भ में मानवाधिकार आयोग का महत्त्व	• उपभोक्ता के रूप में अपने अधिकार एवं कर्त्तव्यों की जानकारी साथ ही शोषण से रक्षा के लिए वैधानिक उपायों की जानकारी	• मिडिया का उदाहरण देकर कुछ संबंधित प्रश्न पूछकर • व्याख्यान विधि द्वारा • वृतचित्र

इकाई—V आपदा प्रबंधन

1. सुनामी
2. सुरक्षित निर्माण
3. जीवन रक्षक कौशल
4. आपदा काल में वैकल्पिक संचार-व्यवस्था (Communication system)
5. आपदा और सहअस्तित्व।

शिक्षण विधि

समाज विज्ञान शिक्षण के लिए पाठ्यपुस्तक शिक्षण विधि के अतिरिक्त वाद-विवाद पद्धति, प्रायोजना कार्य, स्थल-भ्रमण, मानचित्र का संग्रह एवं विश्लेषण, ऐतिहासिक वस्तुओं का संग्रह आदि उपयोगी विधि है। परन्तु वाद-विवाद पद्धति इसके लिए सर्वाधिक उपयोगी होगी।

इसके अतिरिक्त प्रश्नोत्तर की पद्धति भी ज्यादा प्रभावी साबित हो सकती है। साथ में चार्ट, नक्शा, अखबार की कतरन आदि भी प्रभावी शिक्षण में मददगार होंगे।

शिक्षण में प्रोजेक्टर, दृश्य एवं श्रव्य माध्यमों का उपयोग ज्यादा फलदायी होगा।

अधिगम प्रतिफल

समाजविज्ञान के माध्यमिक स्तर के शिक्षण के उपरान्त छात्र ज्ञान, समझ, सूचनाएँ और कौशल से संपन्न होंगे जिससे समाज के विकास की प्रक्रिया समझने, वर्तमान-स्वरूप का चित्रण करने और यथार्थ व गुण-दोष का विवेचन करने में वे सक्षम होंगे। उन्हें अपनी ऐतिहासिक विरासत, वर्तमान की भू-पर्यावरणीय समस्याएँ सत्ता के स्वरूप और आर्थिक अन्तः क्रियाओं की पूर्ण जानकारी होगी और उनके व्यक्तित्व का विस्तार होगा। समाज में फैली बुराइयों के विरुद्ध जनमत बनेगा, ऐतिहासिक विरासत का संरक्षण होगा, प्रजातांत्रिक मूल्यों की जड़ें मजबूत होगी; साथ ही, आर्थिक गतिविधियाँ का विस्तार होगा। समाज में समरसता, सहयोग एवं संवाद बढ़ेगा तथा उन्नति का नया मार्ग प्रशस्त होगा। नागरिक के रूप में समाज निर्माण में वे सक्रिय भागीदारी करेंगे और वास्तविक समस्याओं से अपने को जुड़ा महसूस कर मिलजुल कर पहल करेंगे। इस तरह हम जिम्मेदार, जबावदेह एवं आदर्श नागरिक बना पाएँगे।